14

रिश्तों में ज़िम्मेदारियां

कुलुस्सियों 3:18—4:1

3:18—4:1 में घरेलू सम्बन्धों की अपनी चर्चा में पौलुस ने विभिन्न समूहों के लिए निर्देश और संक्षिप्त व्याख्याएं दीं।[1] उसने तीन समूहों से, जिन्हें अधीन होना आवश्यक था: पत्नियों (3:18), बच्चों (3:20), और दासों (3:22-25) से बात की। तीन और समूहों को ज़िम्मेदारियां दी गईं, जिन्हें उनकी देखभाल करनी थी: पतियों को अपनी पत्नियों से "प्रेम" रखना आवश्यक था (3:19); पिताओं को निर्देश दिया गया, "अपने बालकों को तंग न करो" (3:21); और स्वामियों को आज्ञा दी गई "अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो" (4:1)।

पतियों, पिताओं और स्वामियों को जिन्हें दूसरों के ऊपर अधिकार की भूमिकाएं दी गई थीं उस अधिकार का दुरुपयोग नहीं करना था, बल्कि अपने अधीन लोगों की भलाई के लिए इसका सदुपयोग करना था। दासों का उल्लेख घरेलू सम्बन्धों में किया गया, क्योंकि उस में से कुछ पारिवारिक रूप में सेवा करते थे।

पौलुस द्वारा ठहराए गए मानक के अनुसार अधिकार वालों की ज़िम्मेदारी अपने अधीन लोगों की भलाई की चेष्ठा करना है, जिन्हें बदले में अपने ऊपर अधिकारियों के लिए उचित सम्मान दिखाना आवश्यक है। किसी भी समूह को दूसरे समूह की भावनाओं और आवश्यकताओं का अपमान नहीं करना चाहिए। हर सम्बन्ध में दोहरी ज़िम्मेदारी होती है। पहली और सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यीशु के प्रति है और उसके बाद एक-दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारी। प्रमुख लक्ष्य मसीह को प्रसन्न करना होना चाहिए; दूसरों को प्रसन्न करना गौण लक्ष्य है।

1 पतरस 2:13—3:7 में अधीनता की पतरस की चर्चा में मसीही लोगों को पहले अधिकारियों और हाकिमों के अधीन होना जताया गया है (2:13-16)। यीशु के अनुयायियों के लिए बुरे व्यवहार में भी अधीन होना आवश्यक है क्योंकि उसने भी ऐसा ही कहा था (2:17-25)। मसीही पत्नियों के लिए अपने पतियों के अधीन होने का निर्देश दिया गया है, चाहे वे अविश्वासी ही हों (3:1-6)। पति के प्रति पत्नी की अधीनता वैसी ही अधीनता नहीं है जैसी सरकार के प्रति अधीनता। इसके बजाय अपने पति के लिए पत्नी की अधीनता उसके लिए अपने प्रेम और उनके सम्बन्ध में पाए जाने वाले प्रगाढ़ सम्बन्ध पर आधारित होनी आवश्यक है।

अलग-अलग परिस्थितियों में सिद्ध नमूना यीशु है। वह स्वर्गीय पिता का आज्ञाकार पुत्र था (फिलिप्पियों 2:8; इब्रानियों 5:8; 10:9) और इस कारण वह बच्चों के लिए आज्ञापालन का उदाहरण है। जवान होने पर वह अपने माता-पिता का आज्ञाकार था। इस मामले में बड़ा छोटे के अधीन था; ये श्रेष्ठ योग्यताएं होने पर बच्चों, और दासों के लिए अधीन होने के नमूने का काम कर सकता है। मृत्यु की पीड़ाओं का सामना करते समय यीशु की चिंता अपनी माता के लिए थी। यह चिंता बच्चों के लिए अपने माता-पिता के लिए उपाय करने और पतियों के लिए अपनी

पत्नियों की देखभाल के नमूने का काम करती है। यीशु ने यह दिखाते हुए कि स्वामी किस प्रकार से अपने सेवकों की सेवा कर सकते हैं, अपने चेलों के पांव धोए। यीशु ''इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए'' (मत्ती 20:28), जो माता-पिता और बच्चों के साथ-साथ दासों के लिए भी उदाहरण है।

कुलुस्सियों 3:17 के अनुसार सब कुछ ''प्रभु के नाम'' में किया जाना आवश्यक है। इस कारण पौलुस ने प्रभु पर निर्भर रहने की अपनी अपील की। कुलुस्सियों का उत्तर ''जैसा प्रभु में उचित है'' (3:18) और ''प्रभु इससे प्रसन्न होता है'' (3:20) होना था। उन्हें प्रभु से डरना (3:22) और यह जानते हुए कि वे स्वर्ग में उनका ''स्वामी'' (*kurios*, ''प्रभु'') है (4:1) जैसे प्रभु के लिए करते हों (3:23)। उन्हें इस बात की समझ होनी आवश्यक थी कि उनका प्रतिफल या दण्ड ''प्रभु से'' मिलना था (3:24, 25)।

स्त्रियों को ''हर बात में'' अपने पतियों के अधीन होना आवश्यक है (इफिसियों 5:24)। इसके विपरीत दासों को न केवल अधीन होने, बल्कि आज्ञा मानने के लिए भी कहा गया (तीतुस 2:9; 1 पतरस 2:18)। पत्नियों के लिए ''आज्ञा मानो'' के बजाय ''अधीन रहो'' का इस्तेमाल पिता और बच्चों या स्वामी और दासों के बीच के सम्बन्ध से पत्नी और पति के सम्बन्ध से अलग सम्बन्ध का सुझाव देता है (3:20 पर चर्चा देखें)। पत्नियों से अपने पतियों से आदरपूर्ण सम्मान करने को कहा गया, जबकि बच्चों और दासों को आदर के साथ ''हर बात में'' आज्ञा मानने को कहा गया (इफिसियों 6:1, 5; कुलुस्सियों 3:20, 22)।

''अधीन'' या ''अधीन होना'' (*hupatassō*) के लिए हमें पत्नियों को अकेले नहीं कहा गया है। आइए देखते हैं कि नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल किस प्रकार से हुआ है:

लूका 2:51— यीशु अपने माता-पिता के अधीन रहा।
लूका 10:17— दुष्ट आत्मा उन सत्तरों के अधीन थे, जिन्हें यीशु ने उन्हें निकालने की शक्ति देकर भेजा था।
रोमियों 10:3— यहूदी परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन नहीं हुए थे।
रोमियों 13:1, 5— मसीही लोगों के लिए सरकार के अधीन होना आवश्यक है (देखें तीतुस 3:1; 1 पतरस 2:13)।
1 कुरिन्थियों 14:32— भविष्यवक्ताओं की आत्माएं भविष्यवक्ताओं के अधीन होती थीं।
1 कुरिन्थियों 14:34— स्त्रियों के लिए अधीन होना आवश्यक है, जैसा व्यवस्था भी कहती है।
1 कुरिन्थियों 15:27— सब कुछ यीशु के अधीन किया गया है।
इफिसियों 5:21— मसीही लोग एक-दूसरे के अधीन हों।
इफिसियों 5:24— कलीसिया मसीह के अधीन है।
फिलिप्पियों 3:21— यीशु सब को अपने अधीन कर सकता है।
तीतुस 2:9— दास अपने स्वामियों के अधीन हों (देखें 1 पतरस 2:18)।
इब्रानियों 12:9— मसीही लोग परमेश्वर के अधीन हों।

1 पतरस 3:22— स्वर्गदूत और अधिकारी मसीह के अधीन हैं।
1 पतरस 5:5— नये मसीही पुराने मसीही लोगों के अधीन हों।

मसीही लोग यह न सोचें कि परमेश्वर की दृष्टि में आत्मिक समानता (गलातियों 3:28) उन्हें सभी मानवीय सम्बन्धों में समानता दे देती है। स्वामी को दास के अधीन होने की, माता-पिता को बच्चे के अधीन होने या पति को पत्नी के अधीन होने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय यीशु ने यह ठहरा दिया है कि प्रत्येक मामले में इसका उलट ही है। उसे प्रसन्न करने के लिए हमें उसके ठहराए हुए क्रम का सम्मान करना आवश्यक है।

3:12-14 में व्यक्तिगत चरित्र के गुणों का आधार रखने के बाद पौलुस ने यही नियम कुलुस्सियों के प्रतिदिन के घरेलू सम्बन्धों पर लागू किए। उन्हें "प्रभु यीशु के नाम से" (3:17) यानी उसकी इच्छा के अनुसार किया जाना आवश्यक था।

पारिवारिक स्थिति को दोहरी आशीष मिलती है जब माता-पिता और बच्चे दोनों क्रोध, रोष, वैरभाव, निंदा, गालियां बकना और झूठ बोलना छोड़ देते हैं (3:8, 9)। घर को खुशहाल बनाने के लिए न केवल इन बुराइयों को निकालना आवश्यक है बल्कि कुछ गुणों को निकालना ही आवश्यक नहीं है बल्कि करुणा, भलाई, दीनता, नम्रता, सहनशीलता, क्षमा और प्रेम के गुणों का होना भी आवश्यक है (3:12-14)। अन्तिम गुण घर को एकता और लगाव में जोड़ने के लिए प्रेम परिवार को नकारात्मक को निकालकर सकारात्मक पर सहायता करेगा।

पत्नियां पतियों के (3:18)

[18]हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा ही अपने-अपने पति के अधीन रहो।

"हे पत्नियो अपने-अपने पति के अधीन रहो" (3:18)

स्त्रियां "हर बात में" अपने अपने पतियों के अधीन रहें (इफिसियों 5:24)। पौलुस ने एक वर्तमान अवश्यमाननीय अपने अपने पति के अधीन रहने का निर्देश दिया, जो पत्नियों (*hupotassesthe, hupotassō* से) की निरन्तर अधीनता का संकेत देता है। रॉबर्ट जी. ब्रेचर और यूजीन ए. निडा ने *hupotassō* की यह परिभाषा दी:

> [यह] अधीन अधिकारी के सेना तन्त्र में अपने उच्च अधिकारी के सम्बन्ध के सैनिक संदर्भों में इस्तेमाल होने वाला शब्द है। इफिसियों 5:22 तीतुस 2.5, 1 पतरस 3.1 में पत्नी के अपने पति से सम्बन्ध में, तीतुस 2.9, 1 पतरस 2.13 सेवकों के स्वामियों के सम्बन्ध में, रोमियों 13.1.[2] में लोगों के राज्य के अधिकारियों के सम्बन्ध में किया गया है।[2]

यहां पर इस सोच से बचने के लिए चौकस रहना चाहिए कि 3:18 में मंशा सेक्स की अधीनता नहीं है। चाहे इसमें यह शामिल तो है परन्तु यह "अधीन" के इरादे को निकालती नहीं है। पौलुस ने पति और पत्नी के सेक्स के सम्बन्ध की बात और जगह की है (1 कुरिन्थियों 7:3-5)।

बाइबल के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि पत्नी को अपने पति की इच्छा स्वेच्छा से मानने

को तैयार रहना आवश्यक है। सारा जिसका उदाहरण 1 पतरस 3:5, 6 में मसीही स्त्रियों के लिए उदाहरण के रूप में पतरस ने दिया, वह अब्राहम के ''अधीन'' रहती थी। वह उसे ''स्वामी'' कहकर उसकी ''आज्ञा में'' भी रहती थी। *Hupakouō* से निकले शब्द ''आज्ञा'' की आज्ञा पत्नियों को इस प्रकार से कहीं नहीं दी गई जैसे बच्चों को अपने माता-पिता की ''आज्ञा'' मानने को और दासों को अपने स्वामियों की ''आज्ञा'' मानने की आज्ञा दी जाती।

आइए कुछ और आयतें देखते हैं। इफिसियों 5:22-24 कहता है:

> हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; ... पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें।

तीतुस 2:5 कहता है कि पत्नियां ''अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर की निंदा न होने पाए।'' इसी प्रकार से जो पतरस ने लिखा, ''हे पत्नियों तुम भी अपने-अपने पतियों के अधीन रहो और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं '' (1 पतरस 3:1, 5)।

यीशु द्वारा स्त्रियों को बड़ी स्वन्त्रता दी गई थी और उन्हें अपने पतियों द्वारा आदर और प्रेम किए जाने तक ऊंचा उठाया गया। अपने परिवारों की देखभाल और उपाय करने का बोझ और ज़िम्मेदारी पतियों को दी गई न कि पत्नियों को। मसीही स्त्रियों को धन्यवादी होना चाहिए कि उन पर ये बोझ नहीं डाले गए हैं। वे परिवार की आवश्यकताओं का ध्यान रखने के बोझिल काम को उठाने की कोशिश न करें, जो उनके पतियों के लिए छोड़े गए हैं। पतियों की देखभाल के लिए धन्यवाद के रूप में उन्हें सहयोग करना चाहिए न कि हठी, ढीठ या ज़िद्दी होना चाहिए।

''जैसा प्रभु में उचित है'' (3:18)

प्रभु में उचित वाक्यांश स्त्रियों के लिए अपने पतियों के प्रति अपनी अधीनता को पहचानने की आवश्यकता को दिखाता है। उनकी अधीनता ऐसी होनी चाहिए जैसी मसीही स्त्रियों के लिए उपयुक्त है। उन्हें अपने पतियों की विनतियों के साथ मेल खाना आवश्यक है। परन्तु उन विनतियों के साथ नहीं, जो यीशु की इच्छा के विपरीत हों। ऐसा ''उचित'' (*anēken*) नहीं होगा, जिसका अर्थ सही और उपयुक्त है। पौलुस ने इफिसियों 5:4 में अनुपयुक्त बातचीत के सम्बन्ध में नकारात्मक अर्थ में और फिलेमोन (फिलेमोन 8, 9) में उसे की गई अपनी विनती को पूरा करने के लिए अपने विश्वास के सम्बन्ध में सकारात्मक अर्थ में इस्तेमाल किया।

इफिसियों 5:24 में पौलुस के ''हर बात'' के इस्तेमाल का अर्थ ''प्रभु में'' सीमित श्रेणी के भीतर ''हर बात'' होगा। यदि पति अपनी पत्नी को परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करने को कहता है तो उसे अपने पति के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानना आवश्यक है (प्रेरितों 5:29)। उसे केवल उसी जीवन के साथ मेल खाती विनतियों के अधीन होना आवश्यक है, जो ''प्रभु में'' है।

पत्नियों के लिए अपने पतियों की बात इस ढंग से मानना आवश्यक है, जो स्वेच्छा से अधीन होने को दिखाता हो। द्वेषपूर्ण, घृणापूर्ण या ढाह से समर्पण उचित नहीं है। पत्नी के लिए

अपने पति के सम्बन्ध में 3:8, 9 वाली सूची में दी गई किसी भी बुराई से बचना आवश्यक है। इसके बजाय उसे 3:12-14 वाले कार्य के द्वारा इसे दिखाना चाहिए। यह उन लोगों की विशेषताएं हैं जो यीशु से प्रेम करते और उसकी सेवा के इच्छुक हैं। इस प्रकार से जीवन बिताकर वह मसीह के अधीन व्यवहार को दर्शाएगी जिसने अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञा मानी (फिलिप्पियों 2:8; इब्रानियों 5:8)। किसी भी अन्य प्रकार का उत्तर एक प्रेमी मसीही पत्नी के लिए उचित नहीं होगा।

पौलुस ने इस आयत में किसी अविश्वासी पति के लिए पत्नी की ज़िम्मेदारी की चर्चा नहीं की। पत्नी के लिए दिए गए निर्देशों में 1 कुरिन्थियों 7:12-16 और 1 पतरस 3:1-6 में शामिल हैं। अविश्वासी की पत्नियों को बताया गया है, "तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिए कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं" (1 पतरस 3:1, 2)।

पति-पत्नियों के (3:19)

[19]हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उन से कठोरता न करो।

"हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उन से कठोरता न करो" (3:19)

अधीन होने की पत्नी की भूमिका आसान हो जाती है यदि उसका पति करुणा से भरा और प्रेमी हो, जो दबाने वाला अत्याचारी नहीं होगा। अपनी पत्नियों के प्रति पतियों के काम प्रेम से संचालित होते हैं। अपनी पत्नी के साथ पति के सम्बन्ध में प्रेम (*agapaō*; वर्तमान अवश्यमाननीय) मुख्य कारक होना आवश्यक है। उसे अपनी पत्नी के प्रति कठोरता नहीं रखनी चाहिए। अनुवादित शब्द "कठोरता" (*pikrainō*) नये नियम में और केवल प्रकाशितवाक्य में मिलता है (8:11; 10:9, 10)।

विवाह से पूर्व वाला प्रेमपूर्वक व्यवहार ही विवाह के बाद भी बना रहना आवश्यक है। विवाह समारोह पति और पत्नी के बीच के प्रेम सम्बन्ध का अन्त नहीं है। इस वाक्यांश का अनुवाद "हे पुरुषों, अपनी स्त्रियों से प्रेम रखो" हो सकता है। पतियों के लिए यूनानी शब्द *andres* "पुरुषों" या "पतियों" का संकेत देता है; और अनुवादित शब्द पत्नियों *gunaikes* "स्त्रियों" या "पत्नियों" दोनों में से किसी के लिए भी हो सकता है। संदर्भ से तय होता है कि इन शब्दों का क्या अनुवाद हो। यहां पर इसका स्पष्ट अर्थ पत्नियों का अपनी पत्नियों के लिए प्रेम के लिए है।

यहां पर और इफिसियों 5:25 में पौलुस ने जो लिखा है उसमें पति-पत्नी के सम्बन्ध में प्रमुख भावना पति की ओर से "प्रेम" होने की है। नये नियम में पत्नियों से कहीं भी अपने पतियों से "प्रेम" (*agapaō*) रखने को नहीं कहा गया। तीतुस 2:4 में बूढ़ी स्त्रियों को जवान स्त्रियों को अपने पतियों से प्रेम रखना सिखाना आवश्यक है। वहां इस्तेमाल हुआ मिश्रित शब्द *philandres* है, जो *phileō* ("प्रेम") और *anēr* ("पति") से लिया गया है।

1 कुरिन्थियों 13:4-8 में श्रेष्ठ विवरण लिखा है कि प्रेम किस प्रकार से किसी से कार्य करवाता है। जिन पतियों का मानना है कि अपने प्रेम को दिखाने का ढंग कंजूस, हठधर्मी प्रभावी होना है वे बार-बार इन आयतों को पढ़कर उसी के अनुसार अपनी पत्नियों से अपने प्रेम को जताना सीखें।

जब कोई पति अपनी पत्नी के साथ भड़कता या ''कठोर'' हो जाता है तो वह बल का इस्तेमाल करते हुए अपने क्रोध और निराशा को जताने की ओर झुक सकता है। पतरस ने लिखा कि पतियों के लिए यह जानते हुए कि वे पुरुषों से कमज़ोर हैं, अपनी पत्नियों को समझना आवश्यक है (1 पतरस 3:7)।

प्रेम और दयालु होकर और बुराई का बदला बुराई से न मोड़कर (रोमियों 12:17) पति अपनी पत्नी के साथ शांतिपूर्वक और सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध बना सकता है। वह अपनी पत्नी के दिल को समझने की कोशिश करे। दोनों को दयालुता और शुभ इच्छा से प्रेम में गठकर और जुड़कर अपनी भावनाओं को एक-दूसरे को बताना चाहिए। 3:8, 9 में दिए गए पापों की सूची को निकालना और 3:12-14 वाले गुणों को बढ़ाना पत्नी के साथ-साथ पति के लिए भी लागू होता है।

पति को अपनी पत्नी पर प्रभुत्व करने और यह मांग करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया गया कि वह उसके अधीन हों। इसके बजाय उसे अपनी पत्नी से प्रेम रखने को कहा गया है। पति यदि पत्नी के प्रेमी सिर के रूप में उसके लिए अपने आपको वैसे ही देने को तैयार हो, जैसे यीशु ने कलीसिया के लिए अपने आपको दे दिया तो विवाह का सम्बन्ध वैसा बन जाएगा, जैसा इसे होना चाहिए (इफिसियों 5:25)।

प्रेम पत्नी को ''वस्तु'' के रूप में देखने से प्रशंसनीय साथी होने तक ऊंचा कर देगा जिसके लिए पति आनन्द से अपने आपको और अपने पूरे समर्पण को दे देगा। यदि पत्नी से केवल अपने पति की कामुक भावनाओं की तृप्ति का इरादा होता तो पौलुस यूनानी क्रिया शब्द *eraō* (सैक्सुअल प्रेम के लिए शब्द) को लिखता। इसके बजाय उसने बलिदानपूर्वक और अपने आपको देने वाले शब्द *agapaō* लिखा। यह इस बात का संकेत है कि पति के लिए अपनी स्वयं की भलाई से बढ़कर पत्नी की भलाई को पहल देनी आवश्यक है।

बच्चे माता-पिता के (3:20)

[20]हे बालको, सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।

''हे बालको, सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो'' (3:20)

बालको (*tekna*) का अर्थ ''संतान'' या ''वंशज'' है। इसमें ''नवजातों,'' ''शिशुओं,'' ''छोटे बच्चों'' या ''पुत्रों'' को स्पष्ट नहीं किया गया। इस शब्द में न तो उम्र को दिखाया गया है और न लिंग को। स्पष्टतया पौलुस यहां किसी भी उम्र के किसी भी बच्चे की बात कर रहा था,

जो घर के अन्दर है।

परमेश्वर की आज्ञाओं के सम्बन्ध में पौलुस द्वारा इस्तेमाल की गई परिभाषा से सम्बन्धित पीटर टी. ओ'ब्रायन ने एक महत्वपूर्ण अवलोकन किया है: बच्चों और दासों को आज्ञा देना स्त्रियों को दिए निर्देश से मज़बूत है। स्त्रियों को ''स्वेच्छिक अधीनता'' के लिए कहा गया है जबकि बच्चों और दासों से ''पूर्ण आज्ञापालन'' की मांग की गई है।[3]

पौलुस ने कहा कि बच्चे सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करें। बच्चों और दासों के लिए इस आज्ञा को सीमित आज्ञापालन नहीं माना जाता। सब में केवल वही सब बातें हैं, जो सही हैं। यदि भक्तिहीन माता-पिता की मांग और देश के कानून के बीच कोई झगड़ा है तो बच्चों के लिए सरकारी नियमों का पालन करना आवश्यक है (रोमियों 13:1-5; 1 पतरस 2:13)। सरकार से भी बड़ी एक जवाबदेही है और वह जवाबदेही परमेश्वर के नियमों को मानने की है (प्रेरितों 4:19; 5:29)।

बच्चे अपने माता-पिता की शर्तों को न चुनें जो वे उनसे करवाना चाहते हैं, बल्कि बच्चों के लिए अपने माता-पिता की इच्छा को मानना आवश्यक है न कि अपने तर्कों या इच्छाओं के अनुसार चलना। साथ ही मसीही माता-पिता की यह सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों से बच्चों की सम्पूर्ण भलाई के लिए बिना सोचे विचारे स्वार्थी इच्छाओं से अपने बच्चों से क्या करवाते हैं।

आम तौर पर आज्ञाकार बच्चे लम्बी आयु का आनन्द लेते हैं क्योंकि परमेश्वर उन्हें आशीष देता है और क्योंकि आमतौर पर उनका व्यवहार और जीवन शैली स्वस्थ होती है। पौलुस ने लिखा, ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' (इफिसियों 6:1-3)। जो बच्चे छोटी उम्र में अपने माता-पिता का आदर करना सीख जाते हैं उन्हें सुधारग्रहों या जेलों में नहीं जाना पड़ता। जहां माता-पिता का आदर नहीं होता वहां समाज का या अधिकार वालों का आदर भी नहीं होगा। भ्रष्ट समाज तभी बनेगा यदि घर में आदर नहीं किया जाता। पौलुस ने भ्रष्ट समाज के अन्य पापों के साथ माता-पिता की आज्ञा न मानने को भी जोड़ा (रोमियों 1:28-32; 2 तीमुथियुस 3:2-5)।

मूसा की व्यवस्था के अधीन बच्चों से अपने माता-पिता का आदर करने की उम्मीद की जाती थी (निर्गमन 20:12; लैव्यव्यवस्था 19:3)। अपने माता-पिता को श्राप देने वालों को मृत्यु दण्ड दिया जाता था (निर्गमन 21:17; लैव्यव्यवस्था 20:9; व्यवस्थाविवरण 21:18-21)। यीशु ने इसी नियम को दोहराया, जब उसने शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा किए गए प्रश्नों के उत्तर दिए (मत्ती 15:4)।

क्या कोई ऐसा युग या परिस्थिति है, जब बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं हो? बाइबल इस प्रश्न का उत्तर कहीं पर देती हुई नहीं लगती। ''बालकों'' उनके लिए है जो अपने बालपन के वर्षों के दौरान माता-पिता के घर में रहते हैं, तो फिर उनका क्या जो बड़े हो चुके हैं और अपनी सम्भाल स्वयं कर रहे हैं? बालकों के लिए अपने माता-पिता की आज्ञा मानना तब तक आवश्यक है जब तक वे उनके साथ रहते हैं और वे उनका खर्च उठाते हैं। अपना-अपना घर परिवार बसा लेने के बाद उन से आज्ञा मानने की उम्मीद नहीं

की जाती। उग्र या परिस्थितियां चाहे जैसी भी हों बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति सम्मान दिखाना चाहिए।

''क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है'' (3:20)

बच्चे आज्ञाकार हों, क्योंकि प्रभु को भाता है (*en kuriō*, मूल में ''प्रभु में'')। माता-पिता का आज्ञापालन प्रभु के साथ मेल खाते हुए होना आवश्यक है। बच्चों का लक्ष्य अन्त में परमेश्वर को प्रसन्न करना होना चाहिए। परमेश्वर की आज्ञा मानने की कोशिश करने वाले अपने माता-पिता की आज्ञा मानने और उन्हें प्रसन्न करना चाहेंगे और भक्त माता-पिता की आज्ञा मानने वाले परमेश्वर को भी प्रसन्न करेंगे।

माता-पिता बच्चों के (3:21)

[21]हे बच्चे वालो, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उन का साहस टूट जाए।

''हे बच्चे वालो, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उन का साहस टूट जाए।'' (3:21)

Pateres शब्द जिसका अर्थ आम तौर पर पिताओ होता है, का इस्तेमाल करते हुए पौलुस माताओं को निकाल रहा था या जैसा कि इब्रानियों 11:23 में अनुवाद हुआ है, दोनों को मिला रहा था? वह पतियों की भूमिका की चर्चा कर रहा था, इस कारण यह निर्देश सम्भवतया केवल पिताओं के लिए था। परन्तु बालकों के प्रशिक्षण में माता-पिता दोनों का योगदान होना आवश्यक है। इसीलिए आयत 20 में पौलुस ने लिखा कि बच्चे अपने माता-पिता का आदर करें।

बच्चों के लिए आज्ञाकार होना आवश्यक है, परन्तु पिता इतना रौब जमाने वाला और अविवेकी न हो कि वह अपने बच्चों को निराश कर दे। तंग (*erethizō*) का अर्थ ''चिड़ाना, उकसाना, कटु बनाना'' सताना, ''क्रोध दिलाना'' है। पौलुस ने इस शब्द का इस्तमाल केवल एक और बार किया, परन्तु वहां उसने दूसरों को प्रोत्साहित करने के सकारात्मक अर्थ में इसका इस्तेमाल किया (2 कुरिन्थियों 9:2, ''उभारा'')। कुलुस्सियों 3:21 में चाहे वह माता-पिता दोनों की बात नहीं कर रहा था पर वह यह संकेत नहीं दे रहा था कि माताओं को अपने बच्चों को तंग करने का अधिकार है।

पिता कठोर आज्ञाओं, छोटी-छोटी गलतियां सुधारने, कड़े नियम लागू करके या कठोर दण्ड देकर अपने बच्चों को तंग कर सकते हैं। उन्हें अनुशासन और कठोर नियम प्रेम और करुणा से लागू करने आवश्यक हैं। पिताओं को अपने बच्चों को बच्चों का सिर खाने वाले, आलोचना करने वाले या नाराज़ करने वाले, शिकायत करते रहने वाले या उकसाते रहने वाले नहीं होना चाहिए जिससे वे क्रोधित हों। बच्चों को नीचा दिखाना, उनके साथ दूसरों के साथ समान ढंग से व्यवहार न करना, या उन्हें न समझ पाना उन्हें बुरी तरह से निराश कर सकता है।

कालांतर में परमेश्वर ने अपने बच्चों को प्रशिक्षण देने के लिए पिताओं को ज़िम्मेदार ठहराया। अपने विशेष लोगों के रूप में उसने पिता के रूप में अब्राहम को चुना, क्योंकि उसने

अपने बाद अपनी संतान को यहोवा के मार्ग में बने रहने के लिए प्रशिक्षित करना था (उत्पत्ति 18:19)। परमेश्वर ने एली को अपने पुत्रों की बुराई के लिए ज़िम्मेदार ठहराया (1 शमूएल 2:27-29; 3:13, 14)। पौलुस ने पिताओं को अपने बच्चों का "प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो" (इफिसियों 6:4)।

बच्चे का प्रशिक्षण यह तय करने के लिए आवश्यक है कि उसका जीवन कैसा होगा। दोष निकालने का नकारात्मक ढंग आवश्यक है, परन्तु अकेले इस ढंग से बच्चों निराशा आएगी। उन्हें सकारात्मक निर्देश और निष्कपट उदाहरण देकर सही जीवन जीने में अगुआई की आवश्यकता है। अच्छा पिता अपने बच्चों के अच्छे कामों में स्वीकृति और संतुष्टि को दिखाएगा ताकि वे प्रोत्साहित हों।

माता-पिता की सहायता के लिए मूल्यवान परामर्श से बच्चे के चरित्र को बढ़ाने के लिए माता-पिता के परामर्श के लिए मूल्यवान पराशर्म नीतिवचन में मिलता है (देखें 13:24; 19:18; 22:6, 15; 23:13, 14; 29:15, 17.)

बच्चों के साथ अति कठोर या अति धीमा व्यवहार जिससे लगे कि माता-पिता उन्हें समझते नहीं हैं, बच्चों को निराश कर देगा या उनका साहस टूट जाएगा। यूनानी भाषा में "साहस टूटना" एक शब्द है (*athumeō*, जो नये नियम में केवल यहीं मिलता है)। इसका अनुवाद "दिल टूटना, निराश होना या उदास होना" भी हो सकता है। बच्चे का कोमल हृदय आसानी से टूट सकता है जिससे उस बच्चे में हीन भावना आ सकती है।

माता-पिता का प्रयास बच्चे को केवल शरारती होने से बचाने के लिए प्रशिक्षण पर केन्द्रित नहीं होना चाहिए। गलत बातों को निकालने पर अत्यधिक बल देने से बच्चे पर नकारात्मक असर हो सकता है। माता-पिता के लिए अपने बच्चों को अपने व्यवहार में मसीह के जैसे बनने का प्रशिक्षण देने का उचित लक्ष्य है, जिसमें नकारात्मक व्यवहारों को निकालने के साथ-साथ सकारात्मक को पहनना शामिल है। बच्चों को बुरे आचरण के लिए लगातार डांट नहीं, बल्कि अनुसरण करने के लिए नायकों या रोल मॉडलों की आवश्यकता होती है। बालक का प्रशिक्षण "उसी मार्ग में जिसमें उसको चलना चाहिए" (नीतिवचन 22:6) देने के लिए उसे उस ढंग में सिखाने से बढ़कर शामिल है, जिसमें उसे नहीं चलना चाहिए। बच्चे को सही दिशा दिखाना शायद उसे गलत दिशा की चेतावनी देने से अधिक महत्वपूर्ण है।

रोमी जगत में पिता को बालक के ऊपर जीवन और मृत्यु की शक्ति का अधिकार होता था। सब लोगों के जीवनों के सम्बन्ध में यीशु ने हर व्यक्ति को, यहां तक कि बच्चों को भी उनकी भावनाओं और भलाई के लिए प्रेमपूर्वक विचार की स्थिति तक ऊंचा उठाया है। मत्ती 7:12 का नियम व्यस्कों और बालकों पर एक समान लागू होता है। माता-पिता को बच्चों के साथ इस प्रकार से व्यवहार करना चाहिए कि जैसा उन्हें लगता है कि उनके साथ होना चाहिए। यदि पिता कुलुस्सियों 3:8, 9, 12-14 में पौलुस द्वारा बताए गए सभी गुणों को लेकर सभी बुराइयों को निकाल दें तो वे अपने बच्चों के साथ प्रेमपूर्वक करुणा सहित व्यवहार करेंगे।

हर किसी को किसी न किसी के अधीन होना आवश्यक है। पतियों, पत्नियों, बच्चों सहित सब लोगों को सरकार अथवा अपने नियोक्ताओं को सब लोगों को आज्ञा मानना आवश्यक है। बच्चों को भी अपने माता-पिता के अधीन होना आवश्यक है। दासों को अपने स्वामियों, माता-

पिता, सरकार और परमेश्वर की आज्ञा मानना आवश्यक है। अधीन होना और आज्ञा मानना हर सम्बन्ध के लिए आवश्यक है; इन उत्तरों से किसी प्रकार के छोटेपन या कम योग्यता का संकेत नहीं है।

दासों का स्वामियों से (3:22-25)

22हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से। 23जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो। 24क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। 25क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां किसी का पक्षपात नहीं।

''हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं,
सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो'' (3:22)

सम्पत्ति की तरह सेवकों को कोई अधिकार नहीं होता था। उन्हें अपने स्वामियों की हर ऊट-पटांग आज्ञा को पूरा करना आवश्यक होता था। कुछ स्वामी दमनकारी होते थे जबकि अन्य अपने दासों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। अपने स्वामी द्वारा उसके साथ चाहे जैसा भी व्यवहार हो, मसीही दास के लिए हर उस बात में जो सही हो, अपने स्वामी की आज्ञा का पालन (*hupakouō*) का निर्देश दिया गया था।

पौलुस ने पत्नियों, पतियों, बच्चों, पिताओं या स्वामियों से दासों को अधिक विस्तार से निर्देश दिया। मसीही दासों के लिए उसकी बड़ी अपील यीशु के साथ सम्बन्ध पर आधारित है। दासों को समझाते हुए उसने कलीसिया के ज़िम्मेदार सदस्यों के प्रति सम्मान दिखाया। उसने केवल उनके मानने के लिए निर्देश जारी नहीं किए, बल्कि ''आज्ञा का पालन करने की उनकी आवश्यकता के कारण भी समझाए।'' उसने अन्य पत्रों में दासों की ज़िम्मेदारियों की बात की (देखें इफिसियों 6:5-8; 1 तीमुथियुस 6:1, 2)। पतरस ने लिखा कि दासों के लिए बुरे और भले दोनों प्रकार के स्वामियों की वफ़ादारी से सेवा करना आवश्यक था (1 पतरस 2:18-20)।

शरीर के अनुसार स्वामी (*tois kata sarka kuriois*) का अर्थ मूलतया ''शरीर के अनुसार स्वामी'' है। यह वाक्यांश मसीही व्यक्ति के स्वर्गीय, आत्मिक प्रभु और स्वामी यीशु के विपरीत है। ''स्वामी'' के लिए शब्द का अनुवाद अधिकतर ''प्रभु'' हुआ है और आम तौर पर इसका इस्तेमाल यीशु के सम्बन्ध में हुआ है। मसीही स्वामी के साथ मसीही दास का सम्बन्ध सांसारिक सम्बन्ध से कहीं बढ़कर था, क्योंकि वह केवल दास ही नहीं बल्कि मसीह में भाई भी था। दास के लिए सब बातों में आज्ञा मानना आवश्यक था। इस वाक्यांश का अर्थ समझ आने वाली श्रेणी के भीतर जो यहां वे सब बातें हैं, जो परमेश्वर की दृष्टि में सही हैं, के अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है।

पहली सदी के समाज में दासत्व को स्वीकार किया जाता था। पौलुस ने दासत्व को स्वीकृति नहीं दी होगी, क्योंकि उसने कुरिन्थियों के नाम लिखा कि यदि दास स्वतन्त्र हो सके तो वह

स्वतन्त्रा को स्वीकार करे (1 कुरिन्थियों 7:21)। परन्तु उसने यह आज्ञा नहीं दी कि दास और स्वामी दासत्व को खत्म करने के लिए सामाजिक क्रांति में भागीदार हों। इसके बजाय उसने वे नियम बताए, जिन से उनके सम्बन्धों में बदलाव आना था। पौलुस ने फिलेमोन के नाम एक पत्र में इस बात की सिफ़ारिश की कि वह उनेसिमुस के साथ अब दास वाला नहीं, बल्कि एक मसीही भाई के रूप में व्यवहार करे (फिलेमोन 16)।

दासों के सम्बन्ध में यीशु की शिक्षाओं ने कलीसिया में उन्हें बराबरी दिला दी जो अन्त में संसार के अधिकतर भागों में दासत्व को खत्म करने का कारण बनी। प्रेम के उसके नियम ने मसीही लोगों को अपने दासों के साथ अपने विरोधी होने के बजाय पड़ोसियों की तरह व्यवहार करते हुए उनके साथ भलाई करने को प्रोत्साहित किया (रोमियों 13:8-10)। दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा कोई अपने साथ चाहता है, के विचार (मत्ती 7:12) ने दासत्व को मिटाने में योगदान दिया।

आज अधिकतर समाजों में चाहे दासत्व की चर्चा अनावश्यक लग सकती है परन्तु मसीही व्यक्ति के लिए यह दास-स्वामी का सम्बन्ध वास्तव में सब से प्रासंगिक विषयों में से एक है क्योंकि मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध के विवरण के लिए यह सबसे उपयुक्त है (देखें 4:1; 1 कुरिन्थियों 7:22)। पौलुस आमतौर पर अपने आपको या किसी साथी मसीही को "दास" कहता था (रोमियों 1:1; कुलुस्सियों 1:7; 4:7)। मसीह के दासों या सेवकों के रूप में हम पौलुस द्वारा दास-स्वामी सम्बन्ध से जुड़े पौलुस के निर्देशों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

"मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं" (3:22)

दिखाने के लिए (*ophthalmodoulia*) यूनानी भाषा में एक ही शब्द है। इस शब्द का अर्थ मुख्यतया "दिखाने के लिए" इफिसियों 6:6 में भी मिलता है। दास के लिए ईमानदारी से परिश्रम केवल तभी नहीं करना था, जब कोई उसे देख रहा हो, जिससे कोई स्वामी या काम देने वाला प्रभावित हो, पर स्वामी की दृष्टि से ओझल पर अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करे। सेवा की सही प्रेरणा यीशु को प्रसन्न करने के लिए की। हर काम उसकी दृष्टि में किया जाना था और उसने अनन्त प्रतिफल देना था। अच्छे दास द्वारा किए गए कठिन परिश्रम के लिए मिलने वाला लाभ उसे सांसारिक प्रतिफल दिला सकता था, परन्तु पाने के लिए इससे भी आवश्यक स्वर्गीय आशिषें थीं। मसीही दास पहले मसीही था (1 कुरिन्थियों 7:22) और फिर अपने सांसारिक स्वामी का था।

मनुष्यों को प्रसन्न (*anthrōpareskoi*) शब्द नये नियम में एक और बार (इफिसियों 6:6) "मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले" के रूप में मिलता है। पौलुस ने इस विचार को शामिल किया चाहे अपने प्रचार के सम्बन्ध में लिखते हुए उसने इसी शब्द का इस्तेमाल नहीं किया। उसे लोगों को प्रसन्न करने के लिए अपने संदेश में बदलाव नहीं किया (गलातियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4), परन्तु जीने के अपने ढंग के द्वारा उसने उन्हें ठोकर दिलाने की कोशिश नहीं की (1 कुरिन्थियों 10:33)।

दास के लिए अपने स्वामी की सेवा केवल तभी नहीं की जानी चाहिए थी जब उसे देखा जा रहा हो या केवल इसलिए कि उसे लगता हो कि आज्ञा मानना आवश्यक है। उसका कार्य दिल से सच्ची सेवा होना चाहिए था, स्वामी या कोई और उसे देख रहा हो या न।

''परन्तु'' (*alla*) के साथ नहीं (*mē*) एक यूनानी मुहावरा है, जो पूरी तरह से निर्माण के पहले भाग को निकालता नहीं है, परन्तु दूसरे पर ज़ोर देता है। इसे ''उतना भी'' के जितना, जितना के रूप में समझा जाए। पौलुस यह नहीं कह रहा था कि दास अपने स्वामियों को प्रसन्न करने से बचें; परन्तु वह कह रहा था कि उनकी पहली प्राथमिकता यीशु को प्रसन्न करने की थी। इसी कारण NASB के अपडेटेड एडिशन के ''केवल मनुष्यों को'' प्रसन्न करने वालों की तरह है। यूनानी धर्मशास्त्र में केवल शब्द न होने के बावजूद यूनानी मुहावरे में इसका अर्थ इंगित है।[4]

आज्ञा मानने या मनुष्यों को प्रसन्न करने की कोशिश करने के लिए भी सेवा करना वे बातें नहीं हैं, जिनसे पूरी तरह से दूर रहना आवश्यक है। पौलुस कह रहा था कि सेवा मनुष्यों को दिखाने और उन्हें प्रसन्न करने की इच्छा के बजाय परमेश्वर के भय से अधिक होनी चाहिए।

''परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से'' (3:22)

अपने स्वामियों के प्रति दिखाया जाने वाला दासों का आदर मसीह के प्रभु होने की समझ पर आधारित था। दासों के दो अलग-अलग प्रभु थे, सांसारिक प्रभु (*kurioi*, ''स्वामी'') और स्वर्गीय प्रभु (*kurios*)। दोनों शब्द एक ही यूनानी शब्द से निकले हैं। परन्तु एक शब्द बहुवचन है, जबकि दूसरा एकवचन। अपने प्रभु यानी परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए दासों के लिए दिल से सच्ची सेवा करना आवश्यक था। मानवीय हृदय व्यक्ति के भीतरी मनुष्य का सार, जिसमें विचार, भावना और इच्छा शामिल है। सीधाई (*haplotēs*) इसी अर्थ में और कहीं मिलती है (2 कुरिन्थियों 1:12; इफिसियों 6:5)। 2 कुरिन्थियों 11:3 में इस यूनानी शब्द का अनुवाद ''सीधाई'' हुआ है और अन्य आयतों में इसमें ''उद्धारता'' का अर्थ देता है (रोमियों 12:8; 2 कुरिन्थियों 8:2; 9:11, 13)।

यूनानी या रोमी दास के लिए उद्देश्य की एकाग्रता वाली सम्पूर्ण एकता का होना आवश्यक था। वह अपने स्वामी की सम्पत्ति होता था। उसे स्वामी को वैसी ही सेवा देनी आवश्यक थी जैसी वह स्वामी होने पर दास से पाने की आशा रखता है।

भय से के लिए यूनानी शब्द *phoboumenoi* का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए होने पर इसकी व्याख्या डर या आतंक के रूप में नहीं, बल्कि दासों को अपने स्वामियों की सेवा करने और पत्नियों को भय (या ''आदर''; देखें 1 पतरस 2:18; 3:2) के द्वारा परमेश्वर की सेवा करने के पतरस के निर्देश इस शब्द का इस्तेमाल किया था। सांसारिक स्वामी के प्रति सम्मान दिखाना आवश्यक था। इससे भी बढ़कर प्रभु को आदर देना आवश्यक है क्योंकि अन्तिम और बड़ा प्रतिफल वही देने वाला है।

> परन्तु मसीही दास ... का सबसे बड़ा इरादा कर्त्तव्य को विश्वासयोग्य और विवेकपूर्ण ढंग से निभाने का था; वह मसीह का सेवक होने को छोड़ सब बातों में बड़ा [था], और उसने पहले और सर्वप्रथम उसे प्रसन्न करने के लिए ही काम करना [था]। उसका मुख्य लक्ष्य सांसारिक स्वामी का भय नहीं बल्कि ''मसीह के लिए भक्ति'' होना चहिए। इससे मसीही सेवकों को उस स्वामी के लिए भी जो कठोर, अविवेकी और अकृतघ्न हो, उत्सुकता से और जोश से काम करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। क्योंकि वे उसकी ओर

से धन्यवाद कहे जाने की नहीं, बल्कि मसीह से उम्मीद करेंगे।[5]

किसी भी प्रकार से ''भय'' के साथ परमेश्वर की सेवा करने का विचार इस शिक्षा का विरोध नहीं करता कि प्रेम भय को नहीं रहने देता। यूहन्ना ने यह नहीं लिखा कि ''प्रेम'' भय को निकाल देता है बल्कि उसने लिखा कि ''सिद्ध प्रेम'' भय को दूर कर देता है (1 यूहन्ना 4:18)। जिस व्यक्ति में ''सिद्ध प्रेम'' है, उसमें सिद्ध आज्ञापालन भी होगा, क्योंकि प्रेम वह प्रेरक बल है जिससे आज्ञा मानने की प्रेरणा मिलती है (यूहन्ना 14:15, 21, 23; 1 यूहन्ना 5:3)। प्रेम को ''सचमुच में उस व्यक्ति द्वारा सिद्ध किया गया है'' जो ''[परमेश्वर के] वचन पर चलता'' है (1 यूहन्ना 2:5)। हम कई बार पाप करते हैं (1 यूहन्ना 1:8, 10); इस कारण हम में सिद्ध प्रेम नहीं हैं। यही कारण है कि हम में भय है। सही किस्म का भय मसीही लोगों को पाप करने और परमेश्वर की आज्ञा न मानने से दूर रखता है (इब्रानियों 10:27, 31)।

''जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो'' (3:23)

दास के लिए ऐसे करते रहना आवश्यक था, जैसे परमेश्वर के लिए काम कर रहा हो। तन मन (*ek psuchēs*), मूलतया, ''जान से'' कुलुस्सियों में केवल यहीं मिलता है। दासों के लिए परमेश्वर के लिए आदर और सेवा करने की भीतरी इच्छा के कारण वफ़ादारी से अपने स्वामियों की आज्ञा मानना आवश्यक था। इससे न केवल उनका अपना नाम बढ़ना था, बल्कि यीशु के नाम को भी महिमा मिलनी थी और मसीहियत का आदर होना था। जो लोग परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए काम करते थे, जिसकी अधिक सम्भावना है, उससे उनके स्वामियों ने भी प्रसन्न होना था। समर्पित सेवा के बावजूद यदि किसी को अपने सांसारिक स्वामी से गालियां मिलें तो स्वर्गीय स्वामी ने फिर भी प्रसन्न होकर उस वफ़ादार दास को स्वर्गीय मीरास के साथ प्रतिफल देना था (1 पतरस 1:3, 4)।

दास के लिए चाहे अपने स्वामी की आज्ञा मानना आवश्यक था, परन्तु यीशु को प्रसन्न करने के लिए उसे सांसारिक स्वामी को प्रसन्न करने से अधिक प्रयास करना आवश्यक था। मसीही बनने के बाद दास को नये और अलग दृष्टिकोण से सेवा करनी थी। यदि हो सकता तो उसे स्वतन्त्रता पानी चाहिए थी नहीं तो उसे जिस सामाजिक स्थिति में बुलाया गया था उसी को स्वीकार करना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 7:20, 21)। जब तक कोई दास हो तब तक उसे स्वेच्छा से अपने स्वामी की सेवा करनी आवश्यक थी जैसे वह परमेश्वर के लिए काम कर रहा हो। उसे सेवा में श्रेष्ठता और अपनी पूरी योग्यता से सेवा करने की कोशिश करनी थी। इस प्रकार से सेवा करने पर जैसे परमेश्वर की सेवा कर रहा हो उसे दूसरों से अलग करना था। जो शायद वैसे सेवा नहीं करते थे। ऐसा करने से उसे दूसरों के लिए नमूना ठहराने के साथ-साथ उसके स्वामी का पक्ष और समाज का आदर मिलना था।

गैर-मसीही दास अपने स्वामियों को प्रसन्न करने के लिए काम करते हो सकते हैं। परन्तु वे यीशु को प्रसन्न करने के लिए काम नहीं करते थे। यीशु को प्रसन्न करते हुए मसीही दास ने अपने स्वामी को भी प्रसन्न करना था। सेवा में जोश मसीही या गैर मसीही स्वामी के लिए काम

करते हुए एक सा होना था।

''तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से मीरास मिलेगी'' (3:24)

दास के लिए इस प्रकार से काम करने का, जैसे वह परमेश्वर की सेवा कर रहा हो, कारण यह है कि उसे स्वर्गीय के बदले में मिलने वाला प्रतिफल किसी भी सांसारिक स्वामी द्वारा उसे दिए जा सकने वाले प्रतिफल से बड़ा होना था। विश्वासी मसीही दास को प्रभु द्वारा प्रतिज्ञा की गई मीरास मिलने का आश्वासन था।

यह ''मीरास'' (*klēronomia*) कमाई गई मज़दूरी नहीं बल्कि विरासत में मिला इनाम था। कुछ इनाम चाहे कमाए जा सकते हैं परन्तु इनाम देने वाले की दयालुता पर आधारित होते हैं। अधिकतर दासों को सांसारिक मीरास मिलने की आशा नहीं है। क्योंकि मीरास आम तौर पर स्वतन्त्र लोगों के लिए होती थी; परन्तु विश्वासी मसीही दासों को स्वर्गीय मीरास मिलने की आशा थी। मसीह में समानता के कारण दास अन्य मसीही लोगों की तरह ही उसी मीरास को पाने की राह देख सकते थे। उन्हें ''ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों'' होना था (कुलुस्सियों 1:12)।

यीशु ने एक दृष्टांत बताया था, जिसमें कुछ किसानों ने दाख की बारी के अपने स्वामी के पुत्र को उसकी मीरास हड़पने के लिए मार डाला था (मत्ती 21:33-40; मरकुस 12:1-11)। मसीही व्यक्ति को मीरास इस प्रकार से नहीं मिलेगी। न ही इसे कमाया जा सकता है। उद्धार की तरह स्वर्ग में अनन्त जीवन एक दान है (प्रेरितों 20:32; इफिसियों 2:8, 9)। इसके अलावा यह उनके लिए जिन्होंने परमेश्वर के पुत्रों के रूप में (रोमियों 8:17; गलातियों 4:7) नया जन्म ले लिया है (यूहन्ना 3:3-5; 1 पतरस 1:3, 4) अनन्तकालिक और कभी खत्म न होनी वाली मीरास है (इब्रानियों 9:15)। व्यक्ति विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर की संतान बनता है जिससे वह प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस बन जाता है (गलातियों 3:26-29)।

मीरास आम तौर पर स्वामी के बच्चों के लिए आरक्षित होती है। आम तौर पर चाहे ऐसा नहीं होता था पर किसी स्वामी के लिए अपनी मीरास अपने दास को देना सम्भव था। सांसारिक सम्पत्ति मीरास में मिलने की प्रतिज्ञा दास के लिए और निष्ठा से सेवा करने का प्रेरक थी। मसीही दास के पास कहीं अधिक प्रेरणा थी क्योंकि उसे किसी भी स्वामी द्वारा दिए जा सकने वाले सांसारिक मूल्य की किसी भी मीरास से कहीं अधिक मिलने की आशा थी। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यह दास मसीह का स्वतन्त्र किया हुआ था (1 कुरिन्थियों 7:22)। क्योंकि मसीह में दास और स्वामी में भेद नहीं है। मसीही दास स्वर्गीय दास की आशा के साथ परमेश्वर का वारिस था (गलातियों 3:26-29; 4:7)। स्वर्ग हर मसीही की एक आशा है (कुलुस्सियों 1:5; इफिसियों 4:4; 1 पतरस 1:3, 4)।

पिता की ओर से मिलने वाली मीरास पृथ्वी पर कोई स्थान नहीं है। यीशु ने समझाया कि आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे (मत्ती 24:35)। पतरस ने लिखा कि वे जल जाएंगे (2 पतरस 3:10) और यूहन्ना ने लिखा कि न्याय के दृश्य में आकाश और पृथ्वी जाते रहेंगे (प्रकाशितवाक्यों 20:11; 21:1)।

मीरास इनाम के रूप में दी गई है न कि मज़दूरी के रूप में। इस कारण उद्धार पाए हुए हर व्यक्ति को वही इनाम मिलेगा। यदि व्यक्तिगत गुण के आधार पर स्वर्ग को कमाया जा सकता

या कोई इसका हकदार हो सकता, जो कि नहीं हो सकता (इफिसियों 2:8, 9)। तो इनाम के अलग-अलग दर्जों की उम्मीद की जा सकती थी। व्यक्ति द्वारा यीशु के लिए जो भी वह कर सकता है, वह कर लेने के बाद भी वह निकम्मा और अयोग्य है (लूका 17:7-10)। केवल यीशु के गुण के द्वारा भी कोई उद्धार पाएगा। जो जीवन भर सेवा करते हैं और जो केवल जीवन के अन्तिम समय में सेवा करते हैं सब को वही इनाम मिलेगा (मत्ती 20:1-16)। हर किसी को स्वर्ग में एक ही रुतबा और समानता मिलेगी।

''तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो'' (3:24)

यह लिखते हुए कि तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो, पौलुस ने बहुवचन क्रिया शब्द (*douleuete*) वह दासों से बात कर रहा था। दासों के लिए ध्यान से सेवा करने का कारण केवल सांसारिक ''स्वामियों'' या ''प्रभुओं'' को प्रसन्न करना नहीं, बल्कि उनसे कहीं बड़े प्रभु को, अर्थात प्रभु मसीह को प्रसन्न करना था। यीशु ने समझाया कि महानतम लोग वे हैं, जो ऐसे सेवा करते हैं, जैसे उसने दूसरों की सेवा की है (मत्ती 20:25-28)। जब वह न्याय के सिंहासन पर बैठेगा तो उसकी दाईं ओर वालों को अनन्त जीवन मिलेगा, क्योंकि उन्होंने दूसरों की सहायता की और ऐसा करके उसकी सेवा की (मत्ती 25:31-40)। दास लोग पृथ्वी पर अपने स्वामियों की सेवा करके यीशु की भी सेवा कर रहे थे।

पौलुस ने चाहे ये निर्देश दासों के लिए लिखे पर इसकी प्रासंगिकता किसी को भी शामिल करने के लिए बनाई जा सकती है, जो किसी दूसरे के प्रति जवाबदेह है। क्योंकि उसने उसके काम करने की सहमति दी है। कर्मचारी के लिए नियोक्ता के लिए सावधानी से काम करना आवश्यक है, ऐसे जैसे वह प्रभु के लिए काम कर रहा हो। उसके लिए नियोक्ता को दिन की मज़दूरी पाने के लिए दिन का अच्छा काम देना आवश्यक है। यीशु की बात यहां लागू होती है: ''इस कारण, जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो'' (मत्ती 7:12)। परमेश्वर का भय मानने वाले कर्मचारी का पहला लक्ष्य यीशु को प्रसन्न करना; दूसरा, नियोक्ता को प्रसन्न करना और तीसरा परिश्रम करना है ताकि उसे अपने काम में व्यक्तिगत संतुष्टि मिल सके (गलातियों 6:4)।

''क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा;
वहां किसी का पक्षपात नहीं'' (3:25)

स्वामी सहित दास या कोई भी अन्य व्यक्ति जो गलत काम करता है, उसे अपनी गलती का परिणाम भुगतना पड़ेगा। यदि पौलुस के कहने का अर्थ यहां केवल दास ही होता तो उसने पिछली आयत में ''तुम्हें (दासों)'' के साथ मिलाते हुए ''जो बुरा करते हैं [बहुवचन]'' लिखता। इसके बजाय उसने लिखा कि जो बुरा करता है, इसका अर्थ यह है कि ''दास, स्वामी, या किसी भी और सहित कोई भी व्यक्ति जो बुरा करता है'' अपने कामों के परिणाम भोगेगा।

निकट सम्बन्ध में बुरा करने का अर्थ दासों का अपने स्वामियों के प्रति असमान या आज्ञा न मानना था। परन्तु ''जो'' का इस्तेमाल करके पौलुस ने किसी को भी जो गलत करता है, शामिल करते हुए एक व्यापक प्रासंगिकता मिला दी।[6] प्रेरितों के साथ रहते हुए उसने प्रभु भोज की

स्थापना की। वहां पर उसने प्रेरितों से सीधे बात करने के समय कहा ''तुम'' (यूहन्ना 14:19, 20); परन्तु जब उसने ''वह'' कहा (यूहन्ना 14:21) तब उसके कहने का अर्थ था, जो कोई यूहन्ना 14-16 में भी उसने पूरी बातचीत में ऐसा ही किया।

फिलेमोन के नाम अपने पत्र में भी पौलुस ने ''हानि'' किए जाने की बात की (आयत 18)। इसमें कोई भी कार्य हो सकता है, जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हो। यीशु बिना पक्षपात के (रोमियों 2:6-11) हर अनुचित कार्य को जिसे लोग करते हैं (2 कुरिन्थियों 5:10) में न्याय करेगा। बदला देना परमेश्वर का अनन्त नियम है। इस्राएलियों के साथ व्यवहार करते हुए, ''हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला'' (इब्रानियों 2:2; देखें व्यवस्थाविवरण 10:17)। ''क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलातियों 6:7)।

हमारी सच्ची और निष्कपट सेवा के दो कारण दिए गए हैं: यीशु उन्हें जो उसकी सेवा करते हैं, स्वर्गीय मीरास देगा और उन्हें जो बुरा करते हैं, दण्ड देगा। उसकी आज्ञापालन से इनाम मिलेगा (इब्रानियों 5:8, 9), परन्तु उसकी इच्छा न मानने से दण्ड मिलना तय है (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9)।

''वहां किसी का पक्षपात नहीं'' (3:25)

परमेश्वर किसी का विशेष समर्थन नहीं करता। वह किसी का पक्षपात किए बिना न्याय करेगा (प्रेरितों 10:34; रोमियों 2:6, 11; 1 पतरस 1:17)। पौलुस ने जो चेतावनी दासों को दी वही स्वामियों को भी दी (इफिसियों 6:9)। यीशु उसी मानक के द्वारा अर्थात उसी व्यवस्था के अनुसार जिसमें वह रहा है, हर किसी का न्याय करेगा। इस्राएली लोग पुराने नियम की व्यवस्था के अधीन थे, उनका न्याय उसी व्यवस्था के द्वारा होना था (रोमियों 2:12)। अन्यजाति लोग जो व्यवस्था के अधीन नहीं थे, उनका न्याय विवेक के अधीन होना था (रोमियों 2:14, 15)। जो लोग नई वाचा के अधीन रहते हैं, जिसे यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा दिया (इब्रानियों 9:15-17), उनका न्याय यीशु की शिक्षाओं के द्वारा होगा (यूहन्ना 12:48)। हर किसी का न्याय उसी मानक के द्वारा होगा जिसके अधीन वह रहता था इस कारण किसी को भी दूसरों से बढ़कर उसे विशेष ध्यान दिए जाने या अनुग्रह मिलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। जिन लोगों का यह मानना है कि वे विशेष व्यवहार दिए जाने के हकदार हैं, वे अनुग्रह के आत्मा का अपमान करते हैं (इब्रानियों 10:29)।

न्याय के दिन मूल्यांकन किए जाने का मानक समान में व्यक्ति की प्रतिष्ठा या उसकी स्थिति नहीं होगा। चेहरा, सम्पत्ति, योग्यता, आर्थिक स्थिति और अन्य कोई व्यक्तिगत गुण परमेश्वर को किसी का भी विशेष पक्ष लेने के लिए न्याय करने को नहीं मनाएंगे। परमेश्वर की दृष्टि में दास, स्वामी और अन्य सब लोग समान हैं। किसी को भी किसी भी दूसरे से बढ़कर लाभ नहीं है क्योंकि परमेश्वर हर किसी के साथ एक समान व्यवहार करता है।

स्वामियों का दासों को (4:1)

[1]हे स्वामियो, अपने-अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।

''हे स्वामियो, अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है'' (4:1)

यूनानी शब्द (*kurioi*) (''स्वामी''; देखें 3:22) का अनुवाद बहुवचन में ''स्वामियों'' किया गया है; परन्तु एक वचन में यह ''प्रभु'' है क्योंकि इसका इस्तेमाल यीशु के लिए हुआ है (1:3, 10; 2:6; 3:13, 17, 18, 20, 23, 24; 4:7, 17)। अधिकतर आरम्भिक मसीही धनवान नहीं होते थे और उनमें से कई दास थे। अपेक्षाकृत उनमें से कुछ के ही दास होंगे। यही कारण हो सकता है कि पौलुस ने दासों के स्वामियों के लिए विस्तृत निर्देश नहीं दिए।

दास के दो प्रभु या स्वामी होते थे, एक सांसारिक और दूसरा स्वर्गीय दासों को सम्पत्ति माना जाता था। जिस कारण स्वामी या काम देने वाले कई बार उनके साथ मनुष्यों के बजाय पशुओं जैसा बर्ताब करते थे। उस समय के नियमों के दासों को कोई सुरक्षा नहीं मिलती थी। परन्तु स्वामियों को अतिरिक्त सम्पत्तियों के रूप में उन पर अधिकार था।

मसीही स्वामियों के लिए दासों का ध्यान रखना और न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करना आवश्यक था। *dikaios* (''न्याय'') शब्द के रूपों का अनुवाद ''सत्य'' (फिलिप्पियों 4:8) और ''धर्मी'' (रोमियों 3:10) हुआ है। ''ठीक-ठीक'' (*isotēs*) नये नियम में दो और बार मिलता है (2 कुरिन्थियों 8:13, 14) जहां इसका अनुवाद उचित संतुलन में रखे जाने के अर्थ में ''बराबरी'' हुआ है। इन दोनों शब्दों के साथ ''और'' को मिलाने पर इसका अर्थ हो जाता है कि स्वामी अपने दासों का ध्यान रखें और उनके साथ व्यवहार करने में जो भी सही और उचित है वह करें। पौलुस यह कह रहा हो सकता है कि स्वामी दासों के साथ-साथी मनुष्यों की तरह समानता का व्यवहार करे। यह एक क्रांतिकारी अवधारणा थी। निश्चय ही स्वतन्त्र लोगों के साथ समान अधिकारों वाले लोगों जैसा व्यवहार करना आम बात नहीं थी या दासों के साथ ऐसा व्यवहार करना जैसा स्वामी अपने साथ किया जाना चाहते हों। तौभी दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करने जैसे कोई अपने साथ चाहता हो कि यीशु की शिक्षा (मत्ती 7:12) स्वामियों पर भी लागू होती है।

पौलुस ने स्वामियों को विशेष रूप में अपने दासों को स्वतन्त्र करने की आज्ञा नहीं दी। सरकारी नियमों में यह आवश्यक नहीं था और मसीहियत सरकार को चुनौती नहीं देती थी। परन्तु जिस प्रकार से खमीर पूरे गुंधे हुए आटे को खमीरा कर देता है वैसे ही मसीह के नियमों ने चुपके से समाज को प्रभावित कर दिया। परिवर्तन लाने का यीशु का ढंग बाहरी बल या सामाजिक क्रांति नहीं है। उसके नियम चाहे क्रांतिकारी हैं परन्तु वे केवल भीतरी बदलाव लाते हैं जो समाज को बदल देते हैं। स्वामियों को दासों के साथ मानवीय व्यवहार करने के यीशु के प्रोत्साहन के कारण कई स्वामियों ने अपने दासों को स्वतन्त्रता दे दी।

दासों के मसीही स्वामियों को ध्यान में रखना आवश्यक था कि मसीह के दासों के रूप में स्वर्ग में उनका भी एक स्वामी था। किसी प्रकार से दासों के लिए आज्ञा मानने और उन्हें प्रसन्न करने की उनकी इच्छा, इन स्वामियों को मसीह को प्रसन्न करने की कोशिश करनी आवश्यक थी। वे चाहे अपने दासों पर लगातार नज़र न रख सकते, परन्तु उनके स्वर्गीय पिता की नज़र से कुछ भी ओझल नहीं होना था।

और अध्ययन के लिए

क्या स्त्रियों का अधीन होना संस्कृति का मामला है

पतियों के साथ पत्नियों के सम्बन्ध में बहुतों का विचार यह है कि पत्नियों से अब पतियों के अधीन होने की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि उनका कहना है कि पौलुस केवल वही बात कर रहा था, जो पहली सदी की संस्कृति में स्वीकार्य थी या उस संस्कृति की बुराइयों को सुधार रहा था। परन्तु पवित्र शास्त्र में स्त्रियों के लिए दिए गए निर्देश संस्कृति पर आधरित नहीं हैं। दूसरों के प्रति अधीन होने के सम्बन्ध में एडवर्ड श्वेज़र ने लिखा है, ''ध्यान से देखा जाए तो यह दूसरे लोगों के लिए नहीं बल्कि प्रभु के लिए है (कुलुस्सियों 3:23)। मूल में इसे किसी भी मानवीय स्वामी से पूर्ण स्वतन्त्रता से कहीं कम नहीं माना जाता था।'[7]

पवित्र शास्त्र आरम्भ की ओर ध्यान दिलाता है। पौलुस और पतरस द्वारा कहीं गई निम्न बातों पर ध्यान दें।

> सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरुष है: और मसीह का सिर परमेश्वर है। ... क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है; और पुरुष स्त्री के लिए नहीं सृजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सृजी गई है (1 कुरिन्थियों 11:3, 8, 9)।
>
> स्त्रियां ... अधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है (1 कुरिन्थियों 14:34)।
>
> मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई (1 तीमुथियुस 2:12, 13)।
>
> और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं (1 पतरस 3:5)।

पौलुस ने यह लिखकर कि ''पुरुष स्त्री का सिर है''; ''स्त्री-पुरुष से हुई;'' ''स्त्री पुरुष के लिए सृजी गई [थी]''; ''[स्त्रियों को] अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है'' और ''आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई'' सृष्टि के परमेश्वर के क्रम की ओर ध्यान दिलाया। पतरस ने ''पूर्व काल'' की भक्त स्त्रियों के आचरण को मसीही स्त्रियों के लिए नमूने के रूप में दिया, जो परमेश्वर को स्वीकार्य होने की कोशिश कर रहे हैं।

कइयों का सवाल है, ''व्यवस्था में स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रहने'' को कहा गया था (देखें 1 कुरिन्थियों 14:34) क्योंकि उन्होंने पाया है कि मूसा पर प्रकट किए गए नियमों और विधियों में ऐसी कोई बात नहीं मिलती। इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से दिया जा सकता है कि यीशु ने कई बार ''व्यवस्था'' का इस्तेमाल पुराने नियम की उन बातों के लिए किया जो मूसा की व्यवस्था में नहीं थीं (देखें भजन संहिता 82:6, यूहन्ना 10:34 में; भजन संहिता 35:19, यूहन्ना 15:25 में उद्धृत)। इसके अलावा पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 14:21 में अपने शिक्षा के समर्थन के

रूप में व्यवस्था की ओर ध्यान दिलाया। चाहे वह यशायाह 28:11, 12 से उद्धृत कर रहा था। इस प्रश्न की बात पर और अधिक संकेत उसका अर्थ व्यवस्था की ओर है, जहां वह गलातियों 4:21, 22 में सारा और हाजरा की बात कर रहा है। स्पष्टतया व्यवस्था के लिए पौलुस की बात केवल मूसा को दिए गए परमेश्वर के नियमों तक सीमित नहीं है। पौलुस एक व्यापक अर्थ में उत्पत्ति को व्यवस्था का भाग मानता है। इस कारण उसके लिए यह कहना कि व्यवस्था कैसी है, ''... और वह तुझ पर प्रभुता करेगा'' (उत्पत्ति 3:16)।

स्त्रियों को दिए गए पौलुस के निर्देश संस्कृति के उलट। मसीही स्त्रियों को दिए गए उसके निर्देश (1 कुरिन्थियों 14:34, 35; 1 तीमुथियुस 2:11, 12)। उन समाजों की सांस्कृति रीतियों पर आधारित नहीं थे, जिनमें वे रहती थीं। यूनानी–रोमी संस्कृति में समाज में स्त्रियां नेतृत्व की भूमिकाओं में आ रही थीं। नीचे दिए गए निम्न उदाहरणों से पता चलता है कि नये नियम के संसार में स्त्रियों की क्या स्थिति थी:

> यह संकेत देने का काफ़ी सबूत है कि पुरुषों की तरह ही स्त्रियों के पास भी कई कार्यालय होते थे और उनसे अपने सार्वजनिक कर्त्तव्यों को पूरा करने की उम्मीद की जाती थी। स्त्रियों के नाम और सम्मान कई आधिकारिक शिलालेखों में उनकी सार्वजनिक सेवा और उदारता को दिखाते हुए मिलते हैं। वे मन्दिरों की देखभाल करतीं और खेलों, जुलूसों और बलिदानों को प्रायोजित करवातीं।[8]

> डायना, आइसिस, लिविया, डायोनिसिस, और लिबे और लिबेरा के काफ़िर समुदायों सहित अधिकतर समुदायों में स्त्रियां याजकों का और अगुओं का काम करती थीं। वे पूजा करवाने में सक्रियता से भाग लेतीं, भजन और संस्कारों को लिखतीं, और मन्दिर और समुदाय के वित्त का संचलन करतीं, पर्व के दिन मनाने का प्रबन्ध करतीं, संगीत बजातीं और नेतृत्व के निर्णय लेतीं, जो बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करने वाले होते।[9]

> ... यूनानी भाषा बोलने वालों का युग सामान्यतया स्त्रियों की मुक्ति का युग था। ... पौलुस के समय में स्त्रियों को काफ़ी आज़ादी, विवाह और तलाक में अधिकार, और कुछ स्थानों में ओर कुछ समुदायों में, सार्वजनिक और धार्मिक पद रखने की छूट थी। ... यूनानी स्त्रियों ने बुर्का उतार दिया था और बाल संवारने के बेशुमार तरीकों के प्रयोग कर रही थीं।[10]

प्रेरितों के काम में लूका ने स्त्रियों की गतिविधियों को दर्ज किया है, जो इस बात का संकेत हैं कि अपने समाजों में उन्हें प्रमुखता दी जाती थी और उन्हें पुरुषों के साथ सक्रिय होने की अनुमति थी। ''कुलीन स्त्रियों'' और ''प्रमुख लोगों'' ने ही पिसिदिया के अन्ताकिया में पौलुस और बरनबास के सताव के लिए उकसाया किया था (प्रेरितों 13:50) और थस्सलुनीके में कुलीन स्त्रियां मसीही बनी थीं (प्रेरितों 17:4)।

समाज चाहे स्त्रियों को वे भूमिकाएं दे दें, जिनकी अनुमति पवित्र शास्त्र में नहीं है पर मसीही स्त्रियों को संसार के प्रभाव में नहीं आना चाहिए (रोमियों 12:2)। उनका लक्ष्य यीशु की आज्ञा को मानना हो, तब भी जब उनकी आज्ञाएं स्थानीय संस्कृति से उलट हों। स्त्रियों को

यह नहीं पूछना चाहिए कि ''समाज को मुझ से क्या उम्मीद है?'' बल्कि यह पूछना चाहिए कि ''यीशु को मुझ से क्या उम्मीद है?''

प्रासंगिकता

पारिवारिक सम्बन्ध

परमेश्वर पति से अपनी पत्नी से प्रेम रखने, पत्नी से अपने पति से प्रेम रखने और माता-पिता से अपने बच्चों से प्रेम रखने की उम्मीद करता है (इफिसियों 5:25; तीतुस 2:4)। परिवारों के लिए एक-दूसरे के लिए प्रेम को बढ़ाना आवश्यक है जैसे पिता के लिए पुत्र का प्रेम है (यूहन्ना 3:35; 5:20; 17:23, 24) और पिता के लिए पुत्र का प्रेम (यूहन्ना 14:31)। बच्चों के लिए अपने पिताओं की इच्छा को वैसे ही मानना आवश्यक है जैसे यीशु ने अपने थोड़ी देर के सांसारिक माता-पिता के अधीन रहा (लूका 2:51)।

परिवार में प्रेम व्यक्त करने के ढंग का मार्गदर्शन 1 कुरिन्थियों 13:4-8 में मिलता है। परिवार के लिए अच्छा विचार घर में एक पट्टा रखने का विचार अच्छा होगा, जिस पर ये आयतें लिखी हों। उन्हें परिवार के सदस्यों को याद दिलाने के लिए कि एक-दूसरे के प्रति उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए बार-बार पढ़ा जाना चाहिए।

हम में से हर किसी को हमारे लिए परमेश्वर की भूमिका को समझना और उसका सम्मान करना आवश्यक है, ताकि हम अपनी अपेक्षित ज़िम्मेदारी लेकर सही ढंग से निभा सकें। बुरी परिस्थितियां तभी आती हैं जब हम वह करने की कोशिश करते हैं, जो करना हमारी ज़िम्मेदारी नहीं होती।

परमेश्वर पति से परिवार में सिर बनने की इच्छा रखता है (इफिसियों 5:23)। उसे परिवार की इकाई का अगुआ होना आवश्यक है। समस्याएं तभी आती हैं जब अगुआ कोई और बन जाता है।

पत्नियां अपने आपको अपने-अपने पतियों के अधीन होकर संवारें, यह पुराने नियम के समयों की सारा जैसी भक्त पत्नियों जैसा ढंग ही है।

> और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के आधीन रहती थीं। जैसे सारा इब्राहीम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी: सो तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार से भय से भयभीत न हो तो उसकी बेटियां ठहरोगी (1 पतरस 3:5, 6)।

एक भक्त पत्नी का चित्रण नीतिवचन 31:10-31 से मिलता है। इन आयतों में उसे अपने पति और अपने बच्चों की देखभाल सहित अपने परिश्रमों सहित दिखाया गया है।

माता-पिता अपने बच्चों के लिए अच्छे उदाहरण हों। बाइबल अच्छे और बुरे दोनों माता-पिता के उदाहरण देती है। अब्राहम अच्छे पिता का उदाहरण है। परमेश्वर को मालूम था कि वह अपने बच्चों को प्रभु के मार्ग की शिक्षा देगा, ताकि वह उन्हें आशीष दे सके (उत्पत्ति 18:19)।

बच्चे अपने माता-पिता का आदर करें और उनकी आज्ञा मानें (इफिसियों 6:1-3)।

परमेश्वर की योजना यही है। इस्राएल के राज्य और दाऊद के परिवार में सब कुछ ठीक-ठाक होना था यदि अक्षालोम अपने पिता का आदर करता और उसके विरुद्ध विद्रोह न करता। अपने पुत्र के विद्रोह के कारण दाऊद को जान बचाने के लिए भागना पड़ा; परन्तु युद्ध छिड़ जाने पर अक्षालोम की सेना हार गई और वह मारा गया। दुखी पिता दाऊद पुकार उठा, ''हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम'' (2 शमूएल 18:33)।

पारिवारिक समस्याएं पैदा हो गई, क्योंकि परिवार में लोगों की भूमिकाओं के लिए परमेश्वर की योजना को नहीं माना गया। परिवार के लिए एक परमेश्वर की योजना में सुधार नहीं कर सकते।

नागरिक सम्बन्ध

नागरिक सम्बन्धों में परमेश्वर लोगों के बीच आदरपूर्वक व्यवहार की उम्मीद करता है। कुलुस्सियों की पत्री में स्वामी-दास सम्बन्धों से हम सीख सकते हैं और इसे नियोक्ता और उनके कर्मचारियों या ऐसी ही परिस्थितियों के बीच सम्बन्ध पर लागू कर सकते हैं।

सेवक अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन उन्हें प्रसन्न करने के प्रयास में दिल से करें। वे प्रभु का भय रखते हुए सेवा करें। वे ऐसे काम करें जैसे प्रभु के लिए काम कर रहे हों, ये मानते हुए कि परमेश्वर उसके स्वामी से बेहतर इनाम दे सकता है।

एलीशा का सेवक गेहाज़ी नबी की इच्छाओं को तब तक पूरा करता रहा, जब तक एक दिन उसने अपनी इच्छा से काम करने का निर्णय नहीं लिया। परमेश्वर द्वारा अपने कोढ़ से चंगाई पाने के बाद नामान को एलीशा से भेंट स्वीकार करने को कहने के समय वह वहीं पर था।

गेहाज़ी ने एलीशा को यह कहते हुए सुना था, ''एलीशा ने कहा, यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ उसके जीवन की शपथ मैं कुछ भेंट न लूंगा'' (2 राजाओं 5:16)। उसे यह समझ होनी चाहिए थी कि वह एलीशा की इच्छा के विपरीत न जाए, परन्तु नामान के पीछे पीछे जाकर उसने उससे झूठ बोला ताकि वह उसे उपहार दे दे। अपने लालच और अवज्ञा के कारण उसे नामान का कोढ़ दे दिया गया (2 राजाओं 5:27)। परमेश्वर अपने सेवकों से अपने स्वामियों की इच्छा का सम्मान तब तक करने की उम्मीद करता है, जब तक उन से परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करने को नहीं कहते (प्रेरितों 5:29)।

सेवकों को दिए गए निर्देश सम्भवतया कर्मचारियों पर भी लागू होते हैं। हमें दिन की मज़दूरी के लिए अच्छा काम देना आवश्यक है। हमें इस प्रकार से काम करना आवश्यक है जिससे यीशु का आदर हो और हम उसके नाम को बदनाम न करें।

हाई स्कूल का एक छात्र गोदाम में बूढ़े लोगों के एक दल के साथ काम करने लगा। जिन्होंने उसे अधिक कड़ा काम न करने की सलाह दी। वे ज़ोर लगाकर केवल तभी काम करते थे, जब मालिक आस-पास होते थे। छात्र इस बात से परेशान था कि वह कठोर काम करता था जबकि दूसरे लोग कम से कम काम करते थे। एक दिन दोपहर के खाने के समय उसने कुलुस्सियों 3:23 पढ़ा जिस के कारण उसने न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि यीशु के लिए काम करने का निर्णय लिया। जब सहायक चुनने के लिए उसके बॉस ने आना था तो उसने बूढ़े लोगों को पीछे करके अपनी सहायता के लिए इस छात्र को चुन लिया।

सुसमाचार सभा में एक प्रचारक को किसी नगर में केवल एक व्यक्ति ने ग्रहण किया। वह

उस स्त्री से प्रभावित हुआ, जो बपतिस्मा लेने के लिए आगे आई थी क्योंकि उस समाज में वह एक विलक्षण स्त्री थी। यह जानने की इच्छा के कारण कि उसने उसे क्या कहा, जिसने उसके दिल को छुआ ताकि वह अन्य सभाओं में उसी बात को दोहरा सके। उसने पूछा, ''क्या आप मुझे बताएंगी कि मैंने कौन सी बात कही या की जिससे आप ने सुसमाचार की आज्ञा माननी चाही?'' उसने उत्तर दिया, ''आपने ऐसा कुछ कहा या किया नहीं है। आपको वह स्त्री याद है जिसके पास सभाओं के दौरान मैं बैठा करती थी? वह मेरी सफाई वाली है। मैं उसके काम से और उसके जीवन से इतना प्रभावित हो गई कि मैंने उससे उसका धर्म पूछ लिया। उसने नम्रतापूर्वक मुझे बताया कि वह यीशु में क्यों विश्वास करती है और उसकी कलीसिया की सदस्य क्यों है। उसके कारण मैं मसीही हूं और मसीह की कलीसिया की सदस्य हूं।''

स्वामी अपने स्वर्गीय स्वामी यीशु का आदर करें। वे अपने सेवकों के साथ उचित व्यवहार करें। यह निर्देश कलीसिया के उन लोगों के लिए भी है, जो काम देते हैं। बॉस लोगों के लिए अपने कर्मियों का ध्यान रखना आवश्यक है। कर्मचारियों को सही वेतन दिया जाना चाहिए और उनके साथ उसी दयालुता के साथ व्यवहार करना चाहिए जिस दयालुता के साथ उनके काम देने वाले चाहते हैं कि उनके साथ किया जाए (मत्ती 7:12)।

सही सम्बन्धों को बढ़ावा देना

हमारी पहली ज़िम्मेदारी परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध है, और हमारी दूसरी ज़िम्मेदारी दूसरे के साथ हमारा सम्बन्ध है। हर सम्बन्ध प्रेम पर आधारित है, जिसमें परमेश्वर, साथी मसीही लोगों, पड़ोसियों और शत्रुओं से प्रेम शामिल है। यदि हमारे सभी सम्बन्ध प्रेम के आधार पर बन जाएं तो एक-दूसरे साथ सम्बन्धों की हमारी बहुत सी समस्याएं सुलझ जाएं।

मसीही लोगों को दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों को समझना और उसका आदर करना और उन सम्बन्धों की अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना आवश्यक है। मसीह की देह के अंगों की एक-दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारी है। हर मसीही को कलीसिया में पूरी करने के लिए भूमिका दी गई है।

पति और पत्नियां (3:18, 19)। पत्नी के लिए अपने पति के अधीन होना आवश्यक है, इसलिए नहीं कि वह अपनी ताकत से उस पर रौब जमा सकता है बल्कि प्रभु की इच्छा के अनुसार स्वेच्छा से अपने आपको उसके अधीन करने के कारण। स्त्री के लिए भावनात्मक अत्याचार के द्वारा अपने पति को वश में न रखें, जो कि शारीरिक अत्याचार के जैसा ही खतरनाक हो सकता है। आम तौर पर स्त्रियां अपनी सुन्दरता के कारण पुरुषों को आकर्षित करती हैं और पुरुष स्त्रियों को उनकी रक्षा और देखभाल की अपनी योग्यता के कारण आकर्षित करते हैं। इन गुणों का इस्तेमाल दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध न हो।

पति अपनी पत्नियों को अधीन करने के लिए ज़बरदस्ती या बल का प्रयोग न करें। इसके बजाय वे गहरे प्रेम के कारण उनकी देखभाल करें (इफिसियों 5:25)। कोई भी सम्बन्ध जिसमें दो या अधिक जन हों, उनमें किसी न किसी को अगुआई करनी आवश्यक होती है। दोनों एक ही समय में अगुआई का काम नहीं कर सकते। परमेश्वर का प्रबन्ध सदा से बेहतरीन काम करता आया है।

माता-पिता और बच्चे (3:20, 21)। समाज तभी पतन की ओर जाता है, जब बच्चे अधिकार का अनादर करते हैं, विशेषकर अपने माता-पिता के अधिकार का। कलीसिया का

भविष्य उन बच्चों पर निर्भर है, जिन्होंने आज्ञापालन सीखा है। प्राचीनों के बच्चे आदर करने वाले और आज्ञाकार होने आवश्यक है (1 तीमुथियुस 3:4, 5)।

नन्हे बच्चों के लिए पिता एक विशाल, ज़बर्दस्ती करने वाले तानाशाह जैसा लग सकता है। उनका क्रोध और अस्वीकृति भयभीत करने वाली हो सकती है। कठोर, अपेक्षा रखने वाले या दबदबा रखने वाले बच्चों को महत्वहीन और अक्षम होने की भावना उनके मन में डाल सकते हैं। ऐसा होने देने के उलट पिताओं को अपने बच्चों में आत्मविश्वास और साहस भरना चाहिए। कई बार छोटे बच्चे यह मानने लगते हैं कि उनके पिता कुछ भी कर सकते हैं। पिताओं को अपने बच्चों को यह विश्वास करने में सहायता करनी चाहिए कि वे भी सब अच्छे लक्ष्यों को पा सकते हैं।

स्वामी और दास (3:22—4:1)। मसीह में व्यक्तियों के बीच कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि आत्मिक रूप में सब समान हैं (गलातियों 3:28)। जिन दासों ने मन परिवर्तन किया था वे मसीह में स्वतन्त्र हो गए। चाहे आत्मिक रूप में वह अपने स्वामियों के बराबर थे परन्तु अभी भी अपने स्वामियों के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी थी। प्रभु को उन से और भी समर्पण के साथ सेवा करते रहने के उम्मीद थी। उनकी सेवा वैसे होनी थी जैसे वे यीशु के लिए काम कर रहे थे। कर्मचारी के लिए यह जानते हुए कि बड़ा और अन्तिम इनाम यीशु ही देगा, अपने नियोक्ता की सेवा इस प्रकार करनी चाहिए। हम में से हर कोई जो कुछ हम ने मानवीय देह में रहते हुए किया है, उस सब का हिसाब यीशु को देगा (2 कुरिन्थियों 5:10)।

स्वामियों से अपने दासों का आदर करने और उनके साथ सही व्यवहार करने को कहा गया, क्योंकि उनका भी एक स्वामी था, जो उनसे वैसा बनने की उम्मीद करता था, जैसा वह है। मसीह के व्यवहार को अपना लेने वाले स्वामी ने अपने दासों से प्रेम करने लगना था और शायद उसे मुक्त कर देना था। कुछ दास भले स्वामियों से इतना जुड़ गए कि उन्होंने उसे छोड़ देने से इनकार कर दिया, तभी भी जब उन्होंने उन्हें आज़ाद कर दिया। अधिकार की स्थिति वाले किसी भी व्यक्ति को अपने अधीन लोगों के साथ व्यवहार करने के ढंग के उदाहरण के रूप में यीशु को देखना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]कुलुस्सियों के इस भाग से संकेत मिल सकता है कि लोगों की मिलती-जुलती श्रेणियां हो सकती हैं। डेविड एम. हेय का अवलोकन है, "स्त्रियां एक ही समय पर पत्नियां, माताएं, [बेटियां], और दासों की स्वामी हो सकती हैं। पुरुष पति, पुत्र, और दासों के स्वामी हो सकते हैं। एक व्यक्ति एक सम्बन्ध में किसी से बढ़कर हो सकता है और किसी दूसरे में किसी से कम" (डेविड एम. हेय, कोलोसियंस, अबिंग्डन न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ [नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस 2000], 140)। [2]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, ए ट्रांसलेटर्स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन, हेल्पस फॉस ट्रांसलेटर्स (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज़, 1977), 92. [3]पीटर टी. ओ'ब्रायन, कोलोसियंस, फिलेमोन, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्रीज़, अंक 44 (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 224. [4]मत्ती 4:4; रोमियों 7:17; 1 कुरिन्थियों 1:17; 1 तीमुथियुस 4:12; 1 पतरस 3:3, 4 भी देखें। [5]ई. के. सिम्पसन एंड एफ़. एफ़. ब्रूस, कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस, द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 294. [6]देखें मत्ती 26:20; मरकुस 14:17; लूका 22:14; यूहन्ना 13:2, 4. [7]एडुअर्ड श्वेज़र, द लैटर टू द कोलोसियंस: ए कमैंट्री, अनु. एंड्रयू चेस्टर (ज्युरिच: बेन्ज़ाइगर वरलग, 1976; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1982), 219. [8]रॉस शेपर्ड क्रेमर एंड मेरी रोज़ डी'एंजलो, विमेन एंड क्रिश्चियन ओरिजन्स (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1999), 86. [9]वेलरी ए. अब्राहमसन, विमेन एंड वरशिप ऐट फिलिपाय: डायना/अर्टिमिस एंड अदर कल्टस इन

द अर्ली क्रिश्चियन इरा (पोर्टलैंड मैइने: एसट्रेट शेल प्रैस, 1995), 194. [10]विलियम बेयर्ड, द कोरिन्थियन चर्च —ए बिब्लिकल एप्रोच टू अरबन कल्चर (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1964), 121-22.

3:18-4:1[1] में सम्बन्धों के लिए मार्ग दर्शन

आयतें	जिनके नाम	निर्देश	व्याख्या
3:18	हे पत्नियो	अपने अपने पति के अधीन रहो	जैसा प्रभु में उचित है
3:19	हे पतियो	अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो	
3:20	हे बालको	अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो	प्रभु इस से प्रसन्न होता है
3:21	हे बच्चे वालो	अपने बालकों को तंग न करो	न हो कि उनका साहस टूट जाए
3:22-25	हे सेवको	जो तुम्हारे स्वामी हैं, उनकी आज्ञा का पालन करो	मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों के समान दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से
4:1	हे स्वामियो	अपने-अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो	स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है

टिप्पणी

[1]इफिसियों 5:22—6:9; तीतुस 2:2-10; 1 पतरस 2:13—3:7 भी देखें।